प्रकाशित वाक्य

1 यह यीशु मसीह का दैवी-सन्देश है जो उसे परमेश्वर
द्वारा इसलिये दिया गया था कि जो बातें शीघ्र ही घटने
वाली हैं, उन्हें अपने दासों को दर्शा दिया जाये। अपना स्वर्गदूत
भेज कर यीशु मसीह ने इसे अपने सेवक यूहन्ना को संकेत
द्वारा बताया। 2यूहन्ना ने जो कुछ देखा था, उसके बारे में
बताया। यह वह सत्य है जिसे उसे यीशु मसीह ने बताया था।
यह वह सन्देश है जो परमेश्वर की ओर से है। 3वे धन्य हैं
जो परमेश्वर के इस दैवी सुसन्देश के शब्दों को सुनते हैं
और जो बातें इसमें लिखी हैं, उन पर चलते हैं। क्योंकि
संकट की घड़ी निकट है।

कलीसियाओं के नाम यूहन्ना का सन्देश

4-5यूहन्ना की ओर से एशिया प्रान्त* में स्थित सात
कलीसियाओं के नाम: उस परमेश्वर की ओर से जो
वर्तमान है, जो सदासदा से था और जो आनेवाला है, उन
सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के सामने हैं
एवम् उस यीशु मसीह की ओर से जो विश्वास-पूर्ण साक्षी,
मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला तथा धरती के
राजाओं का भी राजा है, तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त
हो। वह जो हमसे प्रेम करता है तथा जिसने अपने लहू से
हमारे पापों से हमें छुटकारा दिलाया है। 6उसने हमें एक
राज्य तथा अपने परम पिता परमेश्वर की सेवा में याजक
होने को रचा। उसकी महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा
होती रहे। आमीन! 7देखो, मेघों के साथ मसीह आ रहा
है। हर एक आँख उसका दर्शन करेगी। उनमें वे भी होंगे,
जिन्होंने उसे बेधा था।* तथा धरती के सभी लोग उसके
कारण विलाप करेंगे। हाँ! हाँ निश्चयपूर्वक ऐसा ही
हो-आमीन!

8प्रभु परमेश्वर वह जो है, जो था और जो आनेवाला है,
जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है, "मैं ही अलफा और
ओमेगा हूँ।"*

9मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई हूँ और यातनाओं, राज्य तथा
यीशु में, धैर्यपूर्ण सहनशीलता में तुम्हारा साक्षी हूँ। परमेश्वर
के वचन और यीशु की साक्षी के कारण मुझे पत्तमुस*
नाम के द्वीप में देश निकाला दे दिया गया था। 10प्रभु के
दिन मैं आत्मा के वशीभूत हो उठा और मैंने अपने पीछे
तुरही की सी एक तीव्र आवाज सुनी। 11वह कह रही थी,
"जो कुछ तू देख रहा है, उसे एक पुस्तक में लिखता जा
और फिर उसे इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थूआतीरा,
सरदीस, फिलादेलफिया और लौदीकिया की सातों
कलीसियाओं को भेज दे।"

12फिर यह देखने को कि वह आवाज किसकी है जो
मुझसे बोल रही थी, मैं मुड़ा। और जब मैं मुड़ा तो मैंने
सोने के सात दीपाधार देखे। 13और उन दीपाधारों के बीच
मैंने एक व्यक्ति को देखा जो "मनुष्य के पुत्र" के जैसा
कोई पुरुष था। उसने अपने पैरों तक लम्बा चोगा पहन
रखा था। तथा उसकी छाती पर एक सुनहरी पटका
लिपटा हुआ था।

14उसका सिर तथा केश सफेद ऊन जैसे उजले थे।
तथा उसके नेत्र अग्नि की चमचमाती लपटों के समान थे।
15उसके चरण भट्टी में अभी-अभी तपाये गये उत्तम
काँसे के समान चमक रहे थे। उसका स्वर अनेक
जलधाराओं के गर्जन के समान था। 16तथा उसने अपने

एशिया प्रान्त एशिया माइनर का एक प्रान्त।

जिन्होंने उसे बेधा था देखें यूहन्ना 19:34

अलफा और ओमेगा हूँ मूल में 'मैं ही अलफा हूँ और मैं ही ओमेगा' ये यूनानी की बाहरखड़ी के पहले और अंतिम अक्षरों के नाम हैं। अर्थात् अल्फा यानि 'आदि' और ओमेगा यानी 'अंत', दोनों प्रभु परमेश्वर ही है।

पत्तमुस एइजियन सागर में एशिया माइनर (जो आजकल टर्की कहलाता है) के तट के निकट छोटा द्वीप।

दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए थे। उसके मुख से एक तेज दोधारी तलवार बाहर निकल रही थी। उसकी छवि तीव्रतम दमकते सूर्य के समान उज्ज्वल थी।

17मैंने जब उसे देखा तो मैं उसके चरणों पर मरे हुए के समान गिर पड़ा। फिर उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए कहा, "डर मत, मैं ही प्रथम हूँ और मैं ही अंतिम भी हूँ। 18और मैं ही वह हूँ, जो जीवित है। मैं मर गया था, किन्तु देख अब मैं सदा-सर्वदा के लिये जीवित हूँ। मेरे पास मृत्यु और अधोलोक* की कुंजियाँ हैं। 19सो जो कुछ तूने देखा है, जो कुछ घट रहा है, और जो भविष्य में घटने जा रहा है, उसे लिखता जा। 20ये जो सात तारे हैं जिन्हें तूने मेरे हाथ में देखा है और ये जो सात दीपाधार हैं, इनका रहस्यपूर्ण अर्थ है: ये सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं तथा ये सात दीपाधार सात कलीसियाएँ हैं।

इफिसुस की कलीसिया को मसीह का सन्देश

2 "इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम यह लिख: "वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारों को धारण करता है तथा जो सात दीपाधारों के बीच विचरण करता है; इस प्रकार कहता है: 2मैं तेरे कर्मों कठोर परिश्रम और धैर्यपूर्ण सहनशीलता को जानता हूँ तथा मैं यह भी जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को सहन नहीं कर पाता है तथा तूने उन्हें परखा है जो कहते हैं कि वे प्रेरित हैं किन्तु हैं नहीं। तूने उन्हें झूठा पाया है। 3मैं जानता हूँ कि तुझ में धीरज है और मेरे नाम पर तूने कठिनाइयाँ झेली हैं और तू थका नहीं है।

4"किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तूने वह प्रेम त्याग दिया है जो आरम्भ में तुझ में था। 5सो याद कर कि तू कहाँ से गिरा है, मनफिरा तथा उन कर्मों को कर जिन्हें तू प्रारम्भ में किया करता था, नहीं तो, यदि तूने मन न फिराया, तो मैं तेरे पास आऊँगा और तेरे दीपाधार को उसके स्थान से हटा दूँगा। 6किन्तु यह बात तेरे पक्ष में है कि तू नीकुलइयों* के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ।

7"जिसके पास कान हैं, वह उसे सुनें जो आत्मा कलीसियाओं से कह रहा है। "जो विजय पायेगा मैं उसे परमेश्वर के उपवन में लगे जीवन के वृक्ष से फल खाने का अधिकार दूँगा।"

स्मुरना की कलीसिया को मसीह का सन्देश

8"स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख; वह जो प्रथम है और जो अन्तिम है, जो मर गया था तथा जो पुनर्जीवित हो उठा है, इस प्रकार कहता है-9मैं तुम्हारी यातना और तुम्हारी दीनता के विषय में जानता हूँ। (यद्यपि वास्तव में तुम धनवान हो) जो अपने आपको यहूदी कह रहे हैं, उन्होंने तुम्हारी जो निन्दा की है, मैं उसे भी जानता हूँ। (यद्यपि वे यहूदी हैं नहीं।) बल्कि वे तो उपासकों का एक ऐसा जमघट है जो शैतान से सम्बन्धित है। 10उन यातनाओं से तू बिल्कुल भी मत डर जो तुझे झेलनी हैं। सुनो, शैतान तुम लोगों में से कुछ को बंदीगृह में डाल कर तुम्हारी परीक्षा लेने जा रहा है। और तुम्हें वहाँ दस दिन तक यातना भोगनी होगी। चाहे तुझे मर ही जाना पड़े, पर सच्चा बने रहना मैं तुझे अनन्त जीवन का विजय मुकुट प्रदान करुँगा।

11"जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है। जो विजयी होगा उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं उठानी होगी।

पिरगमुन की कलीसिया को मसीह का सन्देश

12"पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत यह लिख: वह जो तेज दोधारी तलवार को धारण करता है, इस प्रकार कहता है: 13मैं जानता हूँ तू कहाँ रह रहा है। तू वहाँ रह रहा है जहाँ शैतान का सिंहासन है और मैं यह भी जानता हूँ कि तू मेरे नाम को थामे हुए है तथा तूने मेरे प्रति अपने विश्वास को कभी नहीं नकारा है। तुम्हारे उस नगर में जहाँ शैतान का निवास है, मेरा विश्वास पूर्ण साक्षी अन्तिपास मार दिया गया था।

14"कुछ भी हो, मेरे पास तेरे विरोध में कुछ बातें हैं। तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बिलाम की सीख पर चलते हैं। उसने बालाक को सिखाया था कि वह इस्राएल के लोगों को मूर्तियों का चढ़ावा खाने और व्यभिचार करने को प्रोत्साहित करे। 15इसी प्रकार तेरे यहाँ भी कुछ ऐसे लोग हैं जो नीकुलइयों की सीख पर चलते हैं। 16इसलिये

अधोलोक मूल में हेइस अर्थात् वह लोग जहाँ मरने के बाद जाते है।

नीकुलइयों एशिया माइनर का एक धर्म समूह। यह झूठे विश्वासों और धारणाओं का अनुयायी था। इसका नामकरण किसी नीकुलइयो नाम के व्यक्ति पर किया गया होगा।

मन फिरा नहीं तो मैं जल्दी ही तेरे पास आऊँगा और उनके विरोध में उस तलवार से युद्ध करूँगा जो मेरे मुख से निकलती है।

17"जो सुन सकता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है, "जो विजयी होगा, मैं उसे (स्वर्ग में छिपा) मन्ना दूँगा। मैं उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम अंकित होगा। जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता जिसे वह दिया गया है।

थूआतीरा की कलीसिया को मसीह का सन्देश

18"थूआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम: "परमेश्वर का पुत्र, जिसके नेत्र धधकती आग के समान हैं, तथा जिसके चरण शुद्ध काँसे के जैसे हैं, इस प्रकार कहता है 19मैं तेरे कर्मों, तेरे विश्वास, तेरी सेवा तथा तेरी धैर्यपूर्ण सहनशक्ति को जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि अब तू जितना पहले किया करता था, उससे अधिक कर रहा है। 20किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तू इजेबेल नाम की उस स्त्री को सह रहा है जो अपने आपको नबी कहती है। अपनी शिक्षा से वह मेरे सेवकों को व्यभिचार के प्रति तथा मूर्तियों का चढ़ावा खाने को प्रेरित करती है। 21मैंने उसे मन फिराने का अवसर दिया है किन्तु वह परमेश्वर के प्रति व्यभिचार के लिये मन फिराना नहीं चाहती। 22इसलिये अब मैं उसे पीड़ा की शैया पर डालने ही वाला हूँ। तथा उन्हें भी जो उसके साथ व्यभिचार में सम्मिलित हैं। ताकि वे उस समय तक गहन पीड़ा का अनुभव करते रहें जब तक वे उसके साथ किये अपने बुरे कर्मों के लिये मन न फिराव। 23मैं महामारी से उसके बच्चों को मार डालूँगा और सभी कलीसियाओं को यह पता चल जायेगा कि मैं वही हूँ जो लोगों के मन और उनकी बुद्धि को जानता है। मैं तुम सब लोगों को तुम्हारे कर्मों के अनुसार दूँगा।

24"अब मुझे थूआतीरा के उन शेष लोगों से कुछ कहना है जो इस सीख पर नहीं चलते और जो शैतान के तथा कथित गहन रहस्यों को नहीं जानते। मुझे तुम पर कोई और बोझ नहीं डालना है। 25किन्तु जो तुम्हारे पास है, उस पर मेरे आने तक चलते रहो।

26"जो विजय प्राप्त करेगा और जिन बातों का मैंने आदेश दिया है, अंत तक उन पर टिका रहेगा, मैं उन्हें जातियों पर अधिकार दूँगा।

27 तथा 'वह उन पर लोहे के
डण्डे से शासन करेगा।
वह उन्हें माटी के भाँडों की तरह
चूर चूर कर देगा।'

भजन संहिता 2:9

28यह वही अधिकार है जिसे मैंने अपने परमपिता से पाया है। मैं भी उस व्यक्ति को भोर का तारा दूँगा। 29जिसके पास कान हैं, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

सरदीस की कलीसिया के नाम मसीह का सन्देश

3 "सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को इस प्रकार लिख–ऐसा वह कहता है जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ तथा सात तारे हैं, "मैं तुम्हारे कर्मों को जानता हूँ, लोगों का कहना है कि तुम जीवित हो किन्तु वास्तव में तुम मरे हुए हो। 2सावधान रह। तथा जो कुछ शेष है, इससे पहले कि वह पूरी तरह नष्ट हो जाये, उसे सुदृढ़ बना क्योंकि अपने परमेश्वर की निगाह में मैंने तेरे कर्मों को उत्तम नहीं पाया है। 3सो जिस उपदेश को तूने सुना है और प्राप्त किया है, उसे याद कर। उसी पर चल और मनफिराव कर। यदि तू जागा नहीं तो अचानक चोर के समान मैं चला आऊँगा। मैं तुझे कब अचरज में डाल दूँ, तुझे पता भी नहीं चल पायेगा। 4कुछ भी हो सरदीस में तेरे पास कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने को अशुद्ध नहीं किया है। वे श्वेत वस्त्र धारण किये हुए मेरे साथ–साथ घूमेंगे क्योंकि वे सुयोग्य हैं। 5जो विजयी होगा वह इसी प्रकार श्वेत वस्त्र धारण करेगा। मैं जीवन की पुस्तक से उसका नाम नहीं मिटाऊँगा, बल्कि मैं तो उसके नाम को अपने परम पिता और उसके स्वर्गदूतों के सम्मुख मान्यता प्रदान करूँगा।" 6जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

फिलादेलफिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

7"फिलादेलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: वह जो पवित्र और सत्य है तथा जिसके पास दाऊद की कुंजी है जो ऐसा द्वार खोलता है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता, तथा जो ऐसा द्वार बंद करता है, जिसे कोई खोल नहीं सकता; इस प्रकार कहता है। 8"मैं तुम्हारे कर्मों को जानता हूँ। देखो मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार

खोल दिया है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि तेरी शक्ति थोड़ी सी है किन्तु तूने मेरे उपदेशों का पालन किया है तथा मेरे नाम को नकारा नहीं है। 9सुनो कुछ ऐसे हैं जो शैतान की मण्डली के हैं तथा जो यहूदी न होते हुए भी अपने को यहूदी कहते हैं, जो मात्र झूठे हैं, मैं उन्हें यहाँ आने को विवश करके तेरे चरणों तले झुका दूँगा तथा मैं उन्हें विवश करूँगा कि वे यह जानें की तुम मेरे प्रिय हो। 10क्योंकि तुमने धैर्यपूर्वक सहनशीलता के मेरे आदेश का पालन किया है। बदले में मैं भी उस परीक्षा की घड़ी से तुम्हारी रक्षा करूँगा जो इस धरती पर रहने वालों को परखने के लिये सम्पूचे संसार पर बस आने ही वाली है।"

11"मैं बहुत जल्दी आ रहा हूँ। जो कुछ तुम्हारे पास है, उस पर डटे रहो ताकि तुम्हारे विजय मुकुट को कोई तुमसे न ले ले। 12जो विजयी होगा उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा। फिर कभी वह इस मन्दिर से बाहर नहीं जायेगा। तथा मैं अपने परमेश्वर का और अपने परमेश्वर की नगरी का नये यरुशलेम का नाम उस पर लिखूँगा, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरने वाली है। उस पर मैं अपना नया नाम भी लिखूँगा।" 13जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है?

लौदीकिया की कलीसिया को मसीह के सन्देश

14लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: जो आमीन* है, विश्वासपूर्ण है तथा सच्चा साक्षी है, जो परमेश्वर की सृष्टि का शासक है, इस प्रकार कहता है:

15"मैं तेरे कर्मों को जानता हूँ और यह भी कि न तो तू शीतल होता है और न गर्म। 16इसलिए क्योंकि तू गुनगुना है न गर्म और न ही शीतल, मैं तुझे अपने मुख से उगलने जा रहा हूँ। 17तू कहता है, मैं धनी हो गया हूँ और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है किन्तु तुझे पता नहीं है कि तू अभागा है, दयनीय है, दीन है, अंधा है और नंगा है। 18मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू मुझसे आग में तपाया हुआ सोना मोल ले ले ताकि तू सचमुच धनवान हो जाये। पहनने के लिए श्वेत वस्त्र भी मोल ले ले ताकि तेरी लज्जापूर्ण नग्नता का तमाशा न बने। अपने नेत्रों में आँजने के लिये तू अंजन भी ले ले ताकि तू देख पाये।

19"उन सभी को जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, मैं डाँटता हूँ और अनुशासित करता हूँ। तो फिर कठिन जतन और मनफिराव कर। 20सुन, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटा रहा हूँ। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता है तो मैं उसके घर में प्रवेश करूँगा तथा उसके साथ बैठ कर खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ बैठकर खाना खायेगा।

21"जो विजयी होगा मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का गौरव प्रदान करूँगा। ठीक वैसे ही जैसे मैं विजयी बनकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ। 22जो सुन सकता है सुने, कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।"

स्वर्ग के दर्शन

4 इसके बाद मैंने दृष्टि उठाई और स्वर्ग का खुला द्वार मेरे सामने था। और वही आवाज़ जिसे मैंने पहले सुना था, तुरही के से स्वर में मुझसे कह रही थी, "यहीं ऊपर आ जा। मैं तुझे वह दिखाऊँगा जिसका भविष्य में होना निश्चित है।" 2फिर मैं तुरन्त ही आत्मा के वशीभूत हो उठा। मैंने देखा कि मेरे सामने स्वर्ग का सिंहासन था और उस पर कोई विराजमान था। 3जो वहाँ विराजमान था, उसकी आभा यशब और गोमेद के समान थी। उसके सिंहासन के चारों ओर एक इन्द्रधनुष था जो पन्ने जैसा दमक रहा था। 4उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन और थे। जिन पर चौबीस प्राचीन* बैठे हुए थे। उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने थे। उनके सिर पर सोने के मुकुट थे। 5सिंहासन में से बिजली की चकाचौंध, घड़घड़ाहट तथा मेघों का गर्जन–तर्जन निकल रहे थे। सिंहासन के सामने ही लपलपाती हुई सात मशालें जल रही थीं। ये मशालें परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। 6सिंहासन के सामने पारदर्शी काँच का स्फटिक सागर सा फैला था। सिंहासन के ठीक सामने तथा उसके दोनों ओर चार प्राणी थे।

आमीन आमीन शब्द का अर्थ है उस परम सत्य के अनुरुप हो जाना। किन्तु यहाँ इसे यीशु के एक नाम के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

चौबीस प्राचीन कदाचित इन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष हैं जो परमेश्वर के संत जनों के महान नेता थे। हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के नेता हो। तथा शेष बारह यीशु के प्रेरित हैं।

उनके आगे और पीछे आँखें ही आँखें थीं। 7पहला प्राणी
सिंह के समान था, दूसरा प्राणी बैल के जैसा था, तीसरे
प्राणी का मुख मनुष्य के जैसा था और चौथा प्राणी उड़ते
हुए गरूड़ जैसा था। 8इन चारों ही प्राणियों के छह छह पंख
थे। उनके चारों ओर तथा भीतर आँखें ही आँखें भरी पड़ीं
थीं। दिन रात वे निरन्तर कहते रहते थे:

"सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रभु
पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

9जब ये सजीव प्राणी उस अजर अमर की महिमा,
आदर और धन्यवाद कर रहे हैं जो सिंहासन पर विराजमान
था तो 10वे चौबीसों प्राचीन उसके चरणों में गिरकर,
उस सदा सर्वदा जीवित रहने वाले की उपासना करते हैं।
वे सिंहासन के सामने अपने मुकुट डाल देते हैं और कहते
हैं:

11 "हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर!
तू ही महिमा, समादर और
शक्ति पाने को सुयोग्य है।
क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से
सभी वस्तु सरजी हैं।
तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है।
और तेरी ही इच्छा से हुई है उनकी सृष्टि।"

5 फिर मैंने देखा कि जो सिंहासन पर विराजमान था,
उसके दाहिने हाथ में एक लपेटा हुआ चर्मपत्र*
अर्थात् एक ऐसी पुस्तक जिसे लिखकर लपेट दिया जाता
था। जिस पर दोनों ओर लिखावट थी। तथा उसे सात मुहर
लगाकर मुद्रित किया हुआ था। 2मैंने एक शक्तिशाली
स्वर्गदूत की ओर देखा जो दृढ़ स्वर से घोषणा कर रहा
था–"इस लपेटे हुए चर्मपत्र की मुहरों को तोड़ने और
इसे खोलने में समर्थ कौन है?" 3किन्तु स्वर्ग में अथवा
पृथ्वी पर या पाताल लोक में कोई भी ऐसा नहीं था जो
उस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोले और उसके भीतर
झाँके। 4क्योंकि उस चर्मपत्र को खोलने की क्षमता रखने
वाला या भीतर से उसे देखने की शक्ति वाला कोई भी
नहीं मिल पाया था इसलिए मै सुबक–सुबक कर रो पड़ा।
5फिर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, "रोना बंद
कर। सुन, यहूदा के वंश का सिंह जो दाऊद का वंशज है
विजयी हुआ है। वह इन सातों मुहरों को तोड़ने और इस
लपेटे हुए चर्मपत्र को खोलने में समर्थ है।"

6फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन तथा उन चार
प्राणियों के सामने और उन पूर्वजों की उपस्थिति में एक
मेमना खड़ा है। वह ऐसे दिख रहा था, मानो उसकी बलि
चढ़ाई गयी हो। उसके सात सींग थे और सात आँखें थीं जो
परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। जिन्हें समूची धरती पर
भेजा गया था। 7फिर वह आया और जो सिंहासन पर
विराजमान था, उसके दाहिने हाथ से उसने वह लपेटा
हुआ चर्मपत्र ले लिया। 8जब उसने वह लपेटा हुआ चर्मपत्र
ले लिया तो उन चारों प्राणियों तथा चौबीसों प्राचीनों ने उस
मेमने को दण्डवत प्रणाम किया। उनमें से हरेक के पास
वीणा थी तथा वे सुगन्धित सामग्री से भरे सोने के धूपदान
थामे थे; जो संत जनों की प्रार्थनाएँ हैं। 9वे एक नया गीत गा
रहे थे:

"तू यह चर्मपत्र लेने को समर्थ है,
और जो इस पर लगी मुहर खोलने को
क्योंकि तेरा वध बलि के रूप कर दिया,
और अपने लहू से तूने
परमेश्वर के हेतु जनों को
हर जाति से, हर भाषा से,
सभी कुलों से, सब राष्टों से मोल लिया।
10 और तूने उनको रूप का राज्य दे दिया।
और हमारे परमेश्वर के हेतु
उन्हें याजक बनाया।
वहीं धरा पर राज्य करेंगे।

11तभी मैंने देखा और अनेक स्वर्गदूतों की ध्वनियों को
सुना। वे उस सिंहासन, उन प्राणियों तथा प्राचीनों के चारों
ओर खड़े थे। स्वर्गदूतों की संख्या लाखों और करोड़ों थी
12वे ऊँचे स्वर में कह रहे थे:

"वह मेमना जो मार डाला गया था,
वह प्राप्त करने को योग्य है
बल, धन, विवेक
समादर महिमा और स्तुति।"

13फिर मैंने सुना कि स्वर्ग की, धरती पर की पाताल
लोक की, समुद्र की, समूची सृष्टि–हाँ, उस समूचे ब्रह्माण्ड
का हर प्राणी कह रहा था:

चर्मपत्र एक लम्बा लपेटा हुआ कागज अथवा चमड़ा जिसे प्राचीन युग में लिखने के काम में लाया जाता था।

"जो सिंहासन पर बैठा है और मेमना!
वे सदा सदा स्तुति पावें,
पावें आदर, पावें महिमा,
और वे शक्ति को सदा सर्वदा प्राप्त करें।

14फिर उन चारों प्राणियों ने "आमीन" कहा और प्राचीनों
ने नत मस्तक होकर उपासना की।

6 मैंने देखा कि मेमने ने सात मुहरों में से एक को
खोला तभी उन चार प्राणियों में से एक को मैंने मेघ
गर्जना जैसे स्वर में कहते सुना–"आ!" 2जब मैंने दृष्टि उठाई
तो पाया कि मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का
सवार धनुष लिये हुए था। उसे विजय–मुकुट पहनाया गया
और वह विजय पाने के लिये विजय प्राप्त करता हुआ
बाहर चला गया।

3जब मेमने ने दूसरी मुहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को
कहते सुना "आ!" इस पर अग्नि के समान लाल रंग का
4एक और घोड़ा बाहर आया। इस पर बैठे सवार को धरती
से शांति छीन लेने और लोगों से परस्पर हत्याएँ करवाने
को उकसाने का अधिकार दिया गया था। उसे एक लम्बी
तलवार दे दी गयी।

5मेमने ने जब तीसरी मुहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को
कहते सुना, "आ!" जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ मेरे सामने
एक काला घोड़ा खड़ा था। उस पर बैठे सवार के हाथ में
एक तराजू थी। 6तभी मैंने उन चारों प्राणियों के बीच से
एक शब्द सा आते सुना, जो कह रहा था, "एक दिन की
मज़दूरी के बदले एक दिन के खाने का गेहूँ और एक दिन
की मज़दूरी के बदले तीन दिन तक खाने का जौ। किन्तु
जैतून के तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।"

7फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली तो चौथे प्राणी को
मैंने कहते सुना, "आ!" 8फिर जब मैंने दृष्टि उठायी तो मेरे
सामने मरियल सा पीले हरे से रंग का एक घोड़ा उपस्थित
था। उस पर बैठे सवार का नाम था 'मृत्यु' और उसके पीछे
सटा हुआ चल रहा था प्रेत लोक। धरती के एक चौथाई
भाग पर उन्हें यह अधिकार दिया गया कि युद्धों, अकालों,
महामारियों तथा धरती के हिंसक पशुओं के द्वारा वे लोगों
को मार डालें।

9फिर उस मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो मैंने
वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा जिनकी परमेश्वर
के सुसन्देश के प्रति आत्मा के तथा जिस साक्षी को
उन्होंने दिया था, उसके कारण हत्याएँ कर दी गयीं थीं।
10ऊँचे स्वर में पुकारते हुए उन्होंने कहा, "हे पवित्र एवम्
सच्चे प्रभु। हमारी हत्याएँ करने के लिये धरती के लोगों का
न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिये तू कब तक
प्रतीक्षा करता रहेगा? 11उनमें से हर एक को सफेद चोगा
प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस
समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन
साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती
जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की
गयी थी।

12फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी तो मैंने देखा कि
वहाँ एक बड़ा भूचाल आया हुआ है। सूरज ऐसे काला पड़
गया है जैसे किसी शोक मनाते हुए व्यक्ति के वस्त्र होते हैं
तथा पूरा चाँद, लहू के जैसा लाल हो गया है। 13आकाश के
तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे जैसे किसी तेज आँधी द्वारा
झकझोरे जाने पर अंजीर के पेड़ से कच्ची अंजीर गिरती
हैं। 14आकाश फट पड़ा था और एक चर्मपत्र के समान
सिकुड़ कर लिपट गया था। सभी पर्वत और द्वीप
अपने–अपने स्थानों से डिग गये थे।

15संसार के सम्राट, शासक, सेनानायक, धनी शक्तिशाली
और सभी लोग तथा सभी स्वतन्त्र एवम दास लोगों ने पहाड़ों
पर चटटानों के बीच और गुफाओं में अपने आपको छिपा
लिया था। 16वे पहाड़ों और चटटानों से कह रहे थे "हम पर
गिर पड़ो और वह जो सिंहासन पर विराजमान है तथा उस
मेमने के क्रोध के सामने से हमें छिपा लो। 17उनके क्रोध
का भंयकर दिन आ पहुँचा है। ऐसा कौन है जो इसे झेल
सकता है?"

इस्राएल के 1,44,000 लोग

7 इसके बाद धरती के चारों कोनों पर चार
स्वर्गदूतों को मैंने खड़े देखा। धरती की चारों हवाओं
को उन्होंने पकड़ा हुआ था ताकि धरती पर, सागर पर
अथवा वृक्षों पर उनमें से कोई सी भी हवा चल न पाये।
2फिर मैंने देखा कि एक और स्वर्गदूत है जो पूर्व दिशा से
आ रहा है। उसने सजीव परमेश्वर की मुहर ली हुई थी।
तथा वह उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें धरती और आकाश
को नष्ट कर देने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे स्वर
में पुकार कर कह रहा था, 3"जब तक हम अपने परमेश्वर
के सेवकों के माथे पर मुहर नहीं लगा देते, तब तक तुम
धरती, सागर और वृक्षों को हानि मत पहुँचाओ।" 4फिर

जिन लोगों पर मुहर लगायी गयी थी, मैंने उनकी संख्या सुनी। वे एक लाख चवालीस हजार थे। जिन पर मुहर लगायी गयी थी, इस्राएल के सभी परिवार समूहों से थे:

5	यहूदा के परिवार समूह के	12,000
	रूबेन के परिवार समूह के	12,000
	गाद परिवार समूह के	12,000
6	आशेर परिवार समूह के	12,000
	नप्ताली परिवार समूह के	12,000
	मनश्शे परिवार समूह के	12,000
7	शमौन परिवार समूह के	12,000
	लेवी परिवार समूह के	12,000
	इस्साकार परिवार समूह के	12,000
8	जबूलून परिवार समूह के	12,000
	यूसुफ परिवार समूह के	12,000
	बिन्यामीन परिवार समूह के	12,000

विशाल भीड़

9इसके बाद मैंने देखा कि मेरे सामने एक विशाल भीड़ खड़ी थी जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता था। इस भीड़ में हर जाति के हर वंश के, हर कुल के तथा हर भाषा के लोग थे। वे उस सिंहासन और उस मेमने के आगे खड़े थे। वे श्वेत वस्त्र पहने थे और उन्होंने अपने हाथों में खजूर की टहनियाँ ली हुई थीं। 10वे पुकार रहे थे– "सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर की जय हो और मेमने की जय हो।" 11सभी स्वर्गदूत सिंहासन प्राचीनों और उन चारों प्राणियों को घेरे खड़े थे। सिंहासन के सामने दंडवत प्रणाम करके इन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की उपासना की। 12उन्होंने कहा, "आमीन!* हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, विवेक, धन्यवाद, समादर, शक्ति और बल सदा सर्वदा होते रहें। आमीन!" 13तभी उन प्राचीनों में से किसी ने मुझसे प्रश्न किया, "ये श्वेत वस्त्रधारी लोग कौन हैं तथा ये कहाँ से आये हैं?"

14मैंने उसे उत्तर दिया, "मेरे प्रभु तू तो जानता ही है।"

इस पर उसने मुझसे कहा, "ये वे लोग हैं जो कठोर यातनाओं के बीच से होकर आ रहे हैं उन्होंने अपने वस्त्रों को मेमने के लहू से धोकर स्वच्छ एवम् उजला किया है। 15इसीलिये अब ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े तथा उसके मन्दिर में दिन रात उसकी उपासना करते हैं। वह जो सिंहासन पर विराजमान है उनमें निवास करते हुए उनकी रक्षा करेगा। 16न कभी उन्हें भूख सताएगी और न ही वे फिर कभी प्यासे रहेंगे। सूरज उनका कुछ नहीं बिगाड़ेगा और न ही चिलचिलाती धूप कभी उन्हें तपायेगी। 17क्योंकि वह मेमना जो सिंहासन के बीच में है उनकी देखभाल करेगा। वह उन्हें जीवन देने वाले जल स्रोतों के पास ले जायेगा और परमेश्वर उनकी आँखों के हर आँसू को पोंछ देगा।"

सातवीं मुहर

8 फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी तो स्वर्ग में कोई आधा घण्टे तक सन्नाटा छाया रहा। 2फिर मैंने परमेश्वर के सामने खड़े होने वाले सात स्वर्गदूतों को देखा। उन्हें सात तुरहियाँ प्रदान की गयीं थीं।

3फिर एक और स्वर्गदूत आया और वेदी पर खड़ा हो गया। उसके पास सोने का एक धूपदान था। उसे संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर जो सिंहासन के सामने थी, चढ़ाने के लिये बहुत सारी धूप दी गयी। 4फिर स्वर्गदूत के हाथ से धूप का वह धुआँ संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ–साथ परमेश्वर के सामने पहुँचा। 5इसके बाद स्वर्गदूत ने उस धूप दान को उठाया, उसे वेदी की आग से भरा और उछाल कर धरती पर फेंक दिया। इस पर मेघों का गर्जन–तर्जन, भीषण शब्द, बिजली की चमकार और भूकम्प होने लगे।

सात स्वर्गदूतों का उनकी तुरहियाँ बजाना

6फिर वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थी, उन्हें फूँकने को तैयार हो गये।

7पहले स्वर्गदूत ने तुरही में जैसे ही फूँक मारी, वैसे ही लहू ओले और अग्नि एक साथ मिले जुले दिखाई देने लगे और उन्हें धरती पर नीचे उछाल कर फेंक दिया गया। जिससे धरती का एक तिहाई भाग जल कर भस्म हो गया। एक तिहाई पेड़ जल गये और समूची हरी घास राख हो गयी।

8दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो मानो अग्नि का जलता हुआ एक विशाल पहाड़ सा समुद्र में फेंक दिया गया हो। इससे एक तिहाई समुद्र रक्त में बदल गया। 9तथा समुद्र के

आमीन जब कोई व्यक्ति आमीन कहता है तो इसका अर्थ होता है कि वह पूरी तरह उसके साथ सहमत है।

एक तिहाई जीव जन्तु मर गये और एक तिहाई जल पोत नष्ट हो गये।

10तीसरे स्वर्गदूत ने जब तुरही बजाई तो आकाश से मशाल की तरह जलता हुआ एक विशाल तारा गिरा। यह तारा एक तिहाई नदियों तथा झरनों के पानी पर जा पड़ा। 11इस तारे का नाम था 'नागदौना'* सो समूचे जल का एक तिहाई भाग नागदौना में ही बदल गया। तथा उस जल के पीने से बहुत से लोग मारे गये। क्योंकि जल कड़वा हो गया था।

12जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी तो एक तिहाई सूर्य, और साथ में ही एक तिहाई चन्द्रमा और एक तिहाई तारों पर विपत्ति आई। सो उनका एक तिहाई काला पड़ गया। परिणामस्वरूप एक तिहाई दिन तथा उसी प्रकार एक तिहाई रात अन्धेरे में डूब गये।

13फिर मैंने देखा कि एक गरुड़ ऊँचे आकाश में उड़ रहा है। मैंने उसे ऊँचे स्वर में कहते हुए सुना, "उन बचे हुए तीन स्वर्गदूतों की तुरहियों के उद्घोष के कारण जो अपनी तुरहियाँ अभी बजाने ही वाले हैं, धरती के निवासियों पर कष्ट हो! कष्ट हो! कष्ट हो!"

9 पाँचवे स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तब मैंने आकाश से धरती पर गिरा हुआ एक तारा देखा। इसे उस चिमनी की कुंजी दी गयी थी जो पाताल में उतरती है। 2फिर उस तारे ने उस चिमनी का ताला खोल दिया जो पाताल में उतरती थी और चिमनी से वैसे ही धुआँ फूट पड़ा जैसे वह एक बड़ी भट्टी से निकलता है। सो चिमनी से निकले धुआँ से सूर्य और आकाश काले पड़ गये। 3तभी उस धुआँ से धरती पर टिड्डी दल उतर आया। उन्हें धरती के बिच्छुओं के जैसी शक्ति दी गयी थी। 4किन्तु उनसे कह दिया गया था कि वे न तो धरती की घास को कोई हानि पहुँचायें और न ही हरे पौधों या पेड़ों को। उन्हें तो बस उन लोगों को ही हानि पहुँचानी थी जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं लगी हुई थी। 5टिड्डी दल को निर्देश दे दिया गया था कि वे लोगों के प्राण न लें बल्कि पाँच महीने तक उन्हें पीड़ा पहुँचाते रहें। वह पीड़ा जो उन्हें पहुँचाई जा रही थी, वैसी थी जैसी किसी व्यक्ति को बिच्छू के काटने से होती है। 6उन पाँच महीनों के भीतर लोग मौत को ढूँढते फिरेंगे किन्तु मौत उन्हें मिल नहीं पायेगी। वे मरने के लिये तरसेंगे किन्तु मौत उन्हें चकमा देकर निकल जायेगी।

7और अब देखो कि वे टिड्डी युद्ध के लिये तैयार किये गये घोड़ों जैसी दिख रहीं थीं। उनके सिरों पर सुनहरी मुकुट से बँधे थे। उनके मुख मानव मुखों के समान थे। 8उनके बाल स्त्रियों के केशों के समान थे तथा उनके दाँत सिंहों के दाँतों के समान थे। 9उनके सीने ऐसे थे जैसे लोहे के कवच हों। उनके पंखों की ध्वनि युद्ध में जाते हुए असंख्य अश्व रथों से पैदा हुए शब्द के समान थी। 10उनकी पूँछों के बाल ऐसे थे जैसे बिच्छू के डंक हों। तथा उनमें लोगों को पाँच महीने तक क्षति पहुँचाने की शक्ति थी। 11पाताल के अधिकारी दूत को उन्होंने अपने राजा के रूप में लिया हुआ था। इब्रानी भाषा में उसका नाम है 'अबद्दोन'* और यूनानी भाषा में वह 'अपुल्लयोन' (अर्थात् विनाश करनेवाला) कहलाता है।

12पहली महान विपत्ति तो बीत चुकी है किन्तु इसके बाद अभी दो बड़ी विपत्तियाँ और आने वाली हैं।

13फिर छठे स्वर्गदूत ने जैसे ही अपनी तुरही फूँकी, वैसे ही मैंने परमेश्वर के सामने एक सुनहरी वेदी देखी, उसके चार सींगों से आती हुई एक ध्वनि सुनी। 14तुरही लिये हुए उस छठे स्वर्गदूत से उस आवाज ने कहा, "उन चार स्वर्गदूतों को मुक्त कर दो जो फरात महानदी के पास बँधे पड़े हैं।" 15सो चारों स्वर्गदूत मुक्त कर दिये गये। वे उसी घड़ी, उसी दिन, उसी महीने और उसी वर्ष के लिये तैयार रखे गये थे ताकि वे एक तिहाई मानव जाति को मार डालें। 16उनकी पूरी संख्या कितनी थी, यह मैंने सुना। घुड़सवार सैनिकों की संख्या बीस करोड़ थी।

17उस मेरे दिव्य दर्शन में वे घोड़े और उनके सवार मुझे इस प्रकार दिखाई दिये: उन्होंने कवच धारण किये हुए थे जो धधकती आग जैसे लाल, गहरे नीले और गंधक जैसे पीले थे। 18इन तीन महाविनाशों से यानी उनके मुखों से निकल रही अग्नि, धुआँ और गंधक से एक तिहाई मानव जाति को मार डाला गया। 19इन घोड़ों की शक्ति उनके मुख और उनकी पूँछों में निहित थी क्योंकि उनकी पूँछों सिरदार साँपों के समान थी जिनका प्रयोग वे मनुष्यों को हानि पहुँचाने के लिये करते थे।

नागदौना मूल में अपसिन्तोस जो यूनानी भाषा का शब्द है और जिसका अंग्रेजी पर्याय है वर्मवुड जिसका अर्थ है एक बहुत कड़वा पौधा। इसलिए इसे गहन दुःख का प्रतीक माना जाता है।

अबद्दोन अर्थात् विनाश का स्थान।

20इस पर भी बाकी के ऐसे लोगों ने जो इन महा विनाशों से भी नहीं मारे जा सके थे उन्होंने अपने हाथों से किये कामों के लिए अब भी मन न फिराया तथा भूत-प्रेतों की अथवा सोने, चाँदी, काँसे, पत्थर और लकड़ी की उन मूर्तियों की उपासना नहीं छोड़ी, जो न देख सकती हैं, न सुन सकती हैं और न ही चल सकती हैं। 21उन्होंने अपने द्वारा की गयी हत्याओं, जादू टोनों, व्यभिचारों अथवा चोरी-चकारी करने से मन न फिराया।

स्वर्गदूत और छोटी पोथी

10 फिर मैंने आकाश से नीचे उतरते हुए एक और बलवान स्वर्गदूत को देखा। उसने बादल को ओढ़ा हुआ था तथा उसके सिर के आसपास एक मेघ धनुष था। उसका मुखमण्डल सूर्य के समान तथा उसकी टाँगें अग्नि स्तम्भों के जैसी थीं। 2अपने हाथ में उसने एक छोटी सी खुली पोथी ली हुई थी। उसने अपना दाहिना चरण सागर में और बायाँ चरण धरती पर रखा। फिर वह सिंह के समान दहाड़ता हुआ ऊँचे स्वर में चिल्लाया। उसके चिल्लाने पर सातों गर्जन तर्जन के शब्द सुनाई देने लगे। 4जब सातों गर्जन हो चुके और मैं लिखने को ही था, तभी मैंने एक आकाशवाणी सुनी, "सातों गर्जनों ने जो कुछ कहा है, उसे छिपा ले तथा उसे लिख मत।"

5फिर उस स्वर्गदूत ने जिसे मैंने समुद्र में और धरती पर खड़े देखा था, आकाश में ऊपर दाहिना हाथ उठाया। 6और जो नित्य रूप से सजीव है, जिसने आकाश को तथा आकाश की सब वस्तुओं को, धरती एवम् धरती पर की तथा सागर और जो कुछ उसमें है, उन सब की रचना की है, उसकी शपथ लेकर कहा, "अब और अधिक देर नहीं होगी। 7किन्तु जब सातवें स्वर्गदूत को सुनने का समय आयेगा अर्थात् जब वह अपनी तुरही बजाने को होगा तभी परमेश्वर की वह गुप्त योजना पूरी हो जायेगी जिसे उसने अपने सेवक नबियों को बता दिया था।"

8उस आकाशवाणी ने, जिसे मैंने सुना था, मुझसे फिर कहा, "जा और उस स्वर्गदूत से जो सागर में और धरती पर खड़ा है, उसके हाथ से उस खुली पोथी को ले ले।"

9सो मैं उस स्वर्गदूत के पास गया और मैंने उससे कहा कि वह उस छोटी पोथी को मुझे दे दे। उसने मुझसे कहा, "यह ले और इसे खा जा। इससे तेरा पेट कड़वा हो जायेगा किन्तु तेरे मुँह में यह शहद से भी ज्यादा मीठी बन जायेगी।" 10फिर उस स्वर्गदूत के हाथ से मैंने वह छोटी सी पोथी ले ली और मैंने उसे खा लिया। मेरे मुख में यह शहद सी मीठी लगी किन्तु मैं जब उसे खा चुका तो मेरा पेट कड़वा हो गया। 11इस पर वह मुझसे बोला, "तुझे बहुत से लोगों राष्ट्रों, भाषाओं और राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी होगी।"

दो साक्षी

11 इसके पश्चात् नापन के लिये एक सरकंडा मुझे दिया गया जो नापने की छड़ी जैसा दिख रहा था। मुझसे कहा गया, "उठ और परमेश्वर के मन्दिर तथा वेदी को नाप और जो लोग मन्दिर के भीतर उपासना कर रहे हैं, उनकी गिनती कर। 2किन्तु मन्दिर के बाहरी आँगन को रहने दे, उसे मत नाप क्योंकि यह अधर्मियों को दे दिया गया है। वे बयालीस महीने तक पवित्र नगर को अपने पैरों तले रौंदेंगे। 3मैं अपने दो गवाहों को खुली छूट दे दूँगा और वो एक हजार दो सौ साठ दिनों तक भविष्यवाणी करेंगे। वे ऊन के ऐसे वस्त्र धारण किये हुए होंगे जिन्हें शोक प्रदर्शित करने के लिये पहना जाता है।" 4ये दो साक्षियाँ वे दो जैतून के पेड़ तथा वे दो दीपदान हैं जो धरती के प्रभु के सामने स्थित रहते हैं। 5यदि कोई भी उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो उनके मुखों से ज्वाला फूट पड़ती है और उनके शत्रुओं को निगल जाती है। सो यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो निश्चित रूप से उसकी इस प्रकार मृत्यु हो जाती है। 6वे आकाश को बाँध देने की शक्ति रखते हैं ताकि जब वे भविष्यवाणी कर रहे हों, तब कोई वर्षा न होने पाये। उन्हें झरनों के जल पर भी अधिकार था जिससे वे उसे लहू में बदल सकते थे। उनमें ऐसी शक्ति भी थी कि वे जितनी बार चाहते, उतनी ही बार धरती पर हर प्रकार के विनाशों का आघात कर सकते थे।

7उनके साक्षी दे चुकने के बाद, वह पशु उस महागर्त से बाहर निकलेगा और उन पर आक्रमण करेगा। वह उन्हें हरा देगा और मार डालेगा। 8उनकी लाशें उस महानगर की गलियों में पड़ी रहेंगी। (यह नगर प्रतीक रूप से सदोम तथा मिस्र कहलाता है।) यहीं उनके प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ा कर मारा गया था। 9सभी जातियों, उपजातियों, भाषाओं और देशों के लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे तथा वे उनके शवों को कब्रों में नहीं

रखने देंगे। 10धरती के वासी उन पर आनन्द मनायेंगे। वे उत्सव करेंगे तथा परस्पर उपहार भेजेंगे। क्योंकि इन दोनों नबियों ने धरती के निवासियों को बहुत दुःख पहुँचाया था।

11किन्तु साढ़े तीन दिन बाद परमेश्वर की ओर से उनमें जीवन के श्वास ने प्रवेश किया और वे अपने पैरों पर खड़े हो गये। जिन्होंने उन्हें देखा, वे बहुत डर गये थे। 12फिर उन दोनों नबियों ने ऊँचे स्वर में आकाशवाणी को उनसे कहते हुए सुना, "यहाँ ऊपर आ जाओ।" सो वे आकाश के भीतर बादल में ऊपर चले गये। उन्हें ऊपर जाते हुए उनके विरोधियों ने देखा।

13ठीक उसी क्षण वहाँ एक भारी भूचाल आया और नगर का दसवाँ भाग ढह गया। भूचाल में सात हज़ार लोग मारे गये तथा जो लोग बचे थे, वे भयभीत हो उठे और वे स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा का बखान करने लगे।

14इस प्रकार अब दूसरी विपत्ति बीत गयी है किन्तु सावधान! तीसरी महाविपत्ति शीघ्र ही आने वाली है।

सातवीं तुरही

15सातवें स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तो आकाश में तेज आवाजें होने लगीं। वे कह रही थीं:

"अब जगत का राज्य हमारे प्रभु का है,
और उसके मसीह का ही।
अब वह सुशासन युगयुगों तक करेगा।"

16और तभी परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासनों पर विराजमान चौबीसों प्राचीनों ने दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना की। 17वे बोले:

"सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
जो है, जो था,
हम तेरा धन्यवाद करते हैं।
तूने ही अपनी महाशक्ति को लेकर
सबके शासन का आरम्भ किया था।
18 अन्य जातियाँ क्रोध में भरी थीं
किन्तु अब तेरा कोप प्रकटे समय
और न्याय का समय आ गया।
उन सब ही के जो प्राण थे बिसारे।
और समय आ गया कि
तेरे सेवक प्रतिफल पावें
सभी नबी जन, तेरे सब जन
और सभी जो तुझको आदर देते।
और सभी जो छोटे जन हैं
और सभी जो बड़े बने हैं
अपना प्रतिफल पावें।
उन्हें मिटाने का समय आ गया,
धरती को जो मिटा रहे हैं।"

19फिर स्वर्ग में स्थित परमेश्वर के मन्दिर को खोला गया तथा वहाँ मन्दिर में वाचा की वह पेटी दिखाई दी। फिर बिजली की चकाचौंध होने लगी। मेघों का गर्जन- तर्जन और घड़घड़ाहट के शब्द भूकम्प और भयानक ओले बरसने लगे।

स्त्री और विशालकाय अजगर

12 इसके पश्चात् आकाश में एक बड़ा सा संकेत प्रकट हुआ: एक महिला दिखायी दी जिसने सूरज को धारण किया हुआ था और चन्द्रमा उसके पैरों तले था। उसके माथे पर मुकुट था जिसमें बारह तारे जड़े थे। 2वह गर्भवती थी। और क्योंकि प्रसव होने ही वाला था इसलिए प्रजनन की पीड़ा से वह कराह रही थी। 3स्वर्ग में एक और संकेत प्रकट हुआ। मेरे सामने ही एक लाल रंग का विशालकाय अजगर खड़ा था। उसके सातों सिरों पर सात मुकुट थे। 4उसकी पूँछ ने आकाश के तारों के एक तिहाई भाग को सपाटा मार कर धरती पर नीचे फेंक दिया। वह स्त्री जो बच्चे को जन्म देने ही वाली थी, वह अजगर उसके सामने खड़ा हो गया ताकि वह जैसे ही उस बच्चे को जन्म दे, वह उसके बच्चे को निगल जाये। 5फिर उस स्त्री ने एक बच्चे को जन्म दिया जो एक लड़का था। उसे सभी जातियों पर लौह दण्ड के साथ शासन करना था। किन्तु उस बच्चे को उठाकर परमेश्वर और उसके सिंहासन के सामने ले जाया गया। 6और वह स्त्री निर्जन वन में भाग गयी। एक ऐसा स्थान जो परमेश्वर ने उसी के लिये तैयार किया था ताकि वहाँ उसे एक हजार दो सौ साठ दिन तक जीवित रखा जा सके।

7फिर स्वर्ग में एक युद्ध भड़क उठा। मीकाईल और उसके दूतों का उस विशालकाय अजगर से संग्राम हुआ। उस विशालकाय अजगर ने भी उसके दूतों के साथ लड़ाई लड़ी। 8किन्तु वह उन पर भारी नहीं पड़ सका,

सो स्वर्ग में उनका स्थान उनके हाथ से निकल गया। 9और उस विशालकाय अजगर को नीचे धकेल दिया गया। यह वही पुराना महानाग है जिसे दानव अथवा शैतान कहा गया है। यह समूचे संसार को छलता रहता है। हाँ, इसे धरती पर धकेल दिया गया था।

10फिर मैंने ऊँचे स्वर में एक आकाशवाणी को कहते सुना: "यह हमारे परमेश्वर के विजय की घड़ी है। उसने अपनी शक्ति और संप्रभुता का बोध करा दिया है। उसके मसीह ने अपनी शक्ति को प्रकट कर दिया है क्योंकि हमारे बन्धुओं पर परमेश्वर के सामने दिन-रात लांछन लगाने वाले को नीचे धकेल दिया गया है। 11उन्होंने मेमने के बलिदान के रक्त और उनके द्वारा दी गयी साक्षी से उसे हरा दिया है। उन्होंने अपने प्राणों का परित्याग करने तक अपने जीवन की परवाह नहीं की। 12सो हे स्वर्गो, और स्वर्गो के निवासियो, आनन्द मनाओ। किन्तु हाय, धरती और सागर, तुम्हारे लिए कितना बुरा होगा क्योंकि शैतान अब तुम पर उतर आया है। वह क्रोध से आग बबूला हो रहा है। क्योंकि वह जानता है कि अब उसका बहुत थोड़ा समय शेष है।"

13जब उस विशाल काय अजगर ने देखा कि उसे धरती पर नीचे धकेल दिया गया है तो उसने उस स्त्री का पीछा करना शुरू कर दिया जिसने पुत्र जना था। 14किन्तु उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिये प्रदान किये गये ताकि वह उस वन प्रदेश को उड़ जाये, जो उसके लिये तैयार किया गया था। साढ़े तीन साल तक वहीं उस विशाल काय अजगर से दूर उसका भरण-पोषण किया जाना था। 15तब उस महानाग ने उस स्त्री के पीछे अपने मुख से नदी के समान जल धारा प्रवाहित की ताकि वह उसमें बह कर डूब जाये। 16किन्तु धरती ने अपना मुख खोल कर उस स्त्री की सहायता की और उस विशालकाय अजगर ने अपने मुख से जो नदी निकाली थी, उसे निगल लिया। 17इसके बाद तो वह विशालकाय अजगर उस स्त्री पर बहुत क्रोधित हो उठा और उसके उन वंशजों के साथ जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं और यीशु की साक्षी को धारण करते हैं, युद्ध करने को निकल पड़ा।

18तथा सागर के किनारे जा खड़ा हुआ।

दो पशु

13 फिर मैंने सागर में से एक पशु को बाहर आते देखा। उसके दस सींग थे और सात सिर थे। तथा अपने सीगों पर उसने दस राजसी मुकुट पहने हुए थे। उसके सिरों पर दुष्ट नाम अंकित थे।

2मैंने जो पशु देखा था, वह चीते जैसा था। उसके पैर भालू के पैर जैसे थे और उसका मुख सिंह के मुख के समान था। उस विशालकाय अजगर ने अपनी शक्ति, अपना सिंहासन और अपना प्रचुर अधिकार उसे सौंप दिया। 3मैंने देखा कि उसका एक सिर ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे उस पर कोई घातक घाव लगा हो किन्तु उसका वह घातक घाव भर चुका था। समूचा संसार आश्चर्य चकित होकर उस पशु के पीछे हो लिया। 4तथा वे उस विशालकाय अजगर को पूजने लगे। क्योंकि उसने अपना समूचा अधिकार उस पशु को दे दिया था। वे उस पशु की भी उपासना करते हुए कहने लगे, "इस पशु के समान कौन है? और ऐसा कौन है जो उससे लड़ सके?"

5उसे अनुमति दे दी गयी कि वह अहंकारपूर्ण तथा निन्दा से भरे शब्द बोलने में अपने मुख का प्रयोग करे। उसे बयालीस महीने तक अपनी शक्ति के प्रयोग का अधिकार दिया गया। 6सो उसने परमेश्वर की निन्दा करना आरम्भ कर दिया। वह परमेश्वर के नाम और उसके मन्दिर तथा जो स्वर्ग में रहते हैं, उनकी निन्दा करने लगा। 7परमेश्वर के संत जनों के साथ युद्ध करने और उन्हें हराने की अनुमति उसे दे दी गयी। तथा हर वंश, हर जाति, हर परिवार-समूह हर भाषा और हर देश पर उसे अधिकार दिया गया। 8धरती के वे सभी निवासी उस पशु की उपासना करेंगे जिनके नाम उस मेमने की जीवन-पुस्तक में संसार के आरम्भ से ही नहीं लिखे जिसका बलिदान किया जाना सुनिश्चित है। 9यदि किसी के कान हैं तो वह सुने:

10 बंदीगृह में बंदी होना, जिसकी नियति बनी है
वह निश्चय ही बंदी होगा।
यदि कोई असि से मारेगा तो
वह भी उस ही असि से मारा जायेगा।

इसी में तो परमेश्वर के संत जनों से धैर्यपूर्ण सहनशीलता और विश्वास की अपेक्षा है।

11इसके पश्चात् मैंने धरती से निकलते हुए एक और पशु को देखा। उसके मेमने के सींगों जैसे दो सींग थे।

किन्तु वह एक महानाग के समान बोलता था। 12उस विशालकाय अजगर के सामने वह पहले पशु के सभी अधिकारों का उपयोग करता था। उसने धरती और धरती पर सभी रहने वालों से उस पहले पशु की उपासना करवाई जिसका घातक घाव भर चुका था। 13दूसरे पशु ने बड़े-बड़े चमत्कार किये। यहाँ तक कि सभी लोगों के सामने उसने धरती पर आकाश से आग बरसवा दी। 14वह धरती के निवासियों को छलता चला गया क्योंकि उसके पास पहले पशु की उपस्थिति में चमत्कार दिखाने की शक्ति थी। दूसरे पशु ने धरती के निवासियों से उस पहले पशु को आदर देने के लिये जिस पर तलवार का घाव लगा था और जो ठीक हो गया था-उसकी मूर्ति बनाने को कहा। 15दूसरे पशु को यह शक्ति दी गयी कि वह पहले पशु की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करे ताकि पहले पशु की वह मूर्ति न केवल बोल सके बल्कि उन सभी को मार डालने का आदेश भी दे सके जो इस मूर्ति की उपासना नहीं करते। 16-17दूसरे पशु ने छोटों-बड़ों, धनियों-निर्धनों, स्वतन्त्रों और दासों-सभी को विवश किया कि वे अपने-अपने दाहिने हाथों या माथों पर उस पशु के नाम या उसके नामों से सम्बन्धित संख्या की छाप लगवायें ताकि उस छाप को धारण किये बिना कोई भी ले बेच न कर सके। 18जिसमें बुद्धि हो, वह उस पशु के अंक का हिसाब लगा ले क्योंकि वह अंक किसी व्यक्ति के नाम से सम्बन्धित है। उसका अंक है छ: सौ छियाषठ।

मुक्त जनों का गीत

14 फिर मैंने देखा कि मेरे सामने सिय्योन पर्वत पर मेमना खड़ा है। उसके साथ ही एक लाख चवालीस हजार वे लोग भी खड़े थे जिनके माथों पर उसका और उसके पिता का नाम अंकित था। 2फिर मैंने एक आकाशवाणी सुनी, उसका महा नाद एक विशाल जल प्रपात के समान था या घनघोर मेघ गर्जन के जैसा था। जो महानाद मैंने सुना था, वह अनेक वीणा वादकों द्वारा एक साथ बजायी गयी वीणाओं से उत्पन्न संगीत के समान था। 3वे लोग सिंहासन, चारों प्राणियों तथा प्राचीनों के सामने एक नया गीत गा रहे थे। जिन एक लाख चवालीस हजार लोगों को धरती पर फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था उन्हें छोड़ अन्य कोई भी व्यक्ति उस गीत को नहीं सीख सकता था। 4वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने किसी स्त्री के संसर्ग से अपने आपको दूषित नहीं किया था। क्योंकि वे कुंवारे थे जहाँ कहीं मेमना जाता, वे उसका अनुसरण करते। सारी मानव जाति से उन्हें फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था। वे परमेश्वर और मेमने के लिये फसल के पहले फल थे। 5उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला था, वे निर्दोष थे।

तीन स्वर्गदूत

6फिर मैंने आकाश में ऊँची उड़ान भरते एक और स्वर्गदूत को देखा। उसके पास धरती के निवासियों, प्रत्येक देश, जाति, भाषा और कुल के लोगों के लिये सुसमाचार का एक अनन्त सन्देश था। 7ऊँचे स्वर में वह बोला, "परमेश्वर से डरो और उसकी स्तुति करो। क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ गया है। उसकी उपासना करो, जिसने आकाश पृथ्वी, सागर और जल-स्रोतों की रचना की है।"

8इसके पश्चात् उसके पीछे एक और स्वर्गदूत आया और बोला, "उसका पतन हो चुका है, महान नगरी बाबुल का पतन हो चुका है। उसने सभी जातियों को अपने व्यभिचार से उत्पन्न क्रोध की वासनामय मदिरा पिलायी थी।"

9उन दोनों के पश्चात् फिर एक और स्वर्गदूत आया और ऊँचे स्वर में बोला "यदि कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की उपासना करता है और अपने हाथ या माथे पर उसका छाप धारण करता है 10तो वह परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा पीयेगा। ऐसी अमिश्रित तीखी मदिरा जो परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे में तैयार की गयी है। उस व्यक्ति को पवित्र स्वर्गदूतों और मेमने से सामने धधकती हुई गंधक में यातनाएँ दी जायेंगी। 11युग-युगान्तर तक उनकी यातनाओं से धूआँ उठता रहेगा। और जिस किसी पर भी पशु के नाम की छाप अंकित होगी और जो उसकी और उसकी मूर्ति की उपासना करता होगा, उन्हें रात-दिन कभी चैन नहीं मिलेगा।" 12इसी स्थान पर परमेश्वर के उन संत जनों की धैर्यपूर्ण सहनशीलता की अपेक्षा है जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु में अपने विश्वास का पालन करती है।

13फिर एक आकाशवाणी को मैंने यह कहते सुना, "इसे लिख अब से आगे वे ही लोग धन्य होंगे जो प्रभु में स्थित हो कर मरे हैं।"

आत्मा कहता है, "हाँ, यही ठीक है। उन्हें अपने परिश्रम से अब विश्राम मिलेगा क्योंकि उनके कर्म, उनके साथ हैं।"

धरती की फसल की कटनी

14फिर मैंने देखा कि मेरे सामने वहाँ एक सफेद बादल था। और उस बादल पर एक व्यक्ति बैठा था जो मनुष्य के पुत्र* जैसा दिख रहा था। उसने सिर पर एक स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था और उसके हाथ में एक तेज हँसिया था। 15तभी मन्दिर में से एक और स्वर्गदूत बाहर निकला। उसने जो बादल पर बैठा था, उससे ऊँचे स्वर में कहा, "हँसिया चला और फसल इकट्ठी कर क्योंकि फसल काटने का समय आ पहुँचा है। धरती की फसल पक चुकी है।" 16सो जो बादल पर बैठा था, उसने धरती पर अपना हँसिया चलाया तथा धरती की फसल काट ली गयी।

17फिर आकाश में स्थित मन्दिर में से एक और स्वर्गदूत बाहर निकला। उसके पास भी एक तेज हँसिया था। 18तभी वेदी से एक और स्वर्गदूत आया। अग्नि पर उसका अधिकार था। उस स्वर्गदूत से ऊँचे स्वर में कहा, "अपने तेज हँसिये का प्रयोग कर और धरती की बेल से अंगूर के गुच्छे उतार ले क्योंकि इसके अंगूर पक चुके हैं।" 19सो उस स्वर्गदूत ने धरती पर अपना हँसिया झुलाया और धरती के अंगूर उतार लिये और उन्हें परमेश्वर के भयंकर कोप की धानी में डाल दिया। 20अंगूर नगर के बाहर की धानी में रौंद कर निचोड़ लिये गये। धानी में से लहू बह निकला। लहू घोड़े की लगाम जितना ऊपर चढ़ आया और कोई तीन सौ किलो मीटर की दूरी तक फैल गया।

अंतिम विनाश के दूत

15 आकाश में फिर मैंने एक और महान एवम् अदभुत चिह्न देखा। मैंने देखा कि सात दूत हैं जो सात अंतिम महाविनाशों को लिये हुए हैं। ये अंतिम विनाश हैं क्योंकि इनके साथ परमेश्वर का कोप भी समाप्त हो जाता है।

2फिर मुझे काँच का एक सागर सा दिखायी दिया जिसमें मानो आग मिली हो। और मैंने देखा कि उन्होंने उस पशु की मूर्ति पर तथा उसके नाम से सम्बन्धित संख्या पर विजय पा ली है, वे भी उस काँच के सागर पर खड़े हैं। उन्होंने परमेश्वर के द्वारा दी गयी वीणाएँ ली हुई थीं। 3वे परमेश्वर के सेवक मूसा और मेमने का यह गीत गा रहे थे:

"वे कर्म जिन्हें तू करता रहता, महान है।
तेरे कर्म अदभुत, तेरी शक्ति अनन्त है,
हे प्रभु परमेश्वर,
तेरे मार्ग सच्चे और धार्मिकता से भरे हुए हैं।
सभी जातियों का राजा,
4 हे प्रभु, तुझसे सब लोग सदा भयभीत रहेंगे।
तेरा नाम लेकर सब जन स्तुति करेंगे
क्योंकि तू मात्र ही पवित्र है।
सभी जातियों तेरे सम्मुख उपस्थित हुई
तेरी उपासना करें।
क्योंकि उजागर तथ्य यही है
हे प्रभु, तू जो करता वही न्याय है।"

5इसके पश्चात् मैंने देखा कि स्वर्ग के मन्दिर अर्थात् वाचा के तम्बू को खोला गया 6और वे सातों दूत जिनके पास अंतिम सात विनाश थे, मन्दिर से बाहर आये। उन्होंने चमकीले स्वच्छ सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र पहने हुए थे। अपने सीनों पर सोने के पटके बाँधे हुए थे। 7फिर उन चार प्राणियों में से एक ने उन सातों दूतों को सोने के कटोरे दिये जो सदा-सर्वदा के लिये अमर परमेश्वर के कोप से भरे हुए थे। 8वह मन्दिर परमेश्वर की महिमा और उसकी शक्ति के धुएँ से भरा हुआ था ताकि जब तक उन सात दूतों के सात विनाश पूरे न हो जायें, तब तक मन्दिर में कोई भी प्रवेश न करने पाये।

परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे

16 फिर मैंने सुना कि मन्दिर में से एक ऊँचा स्वर उन सात दूतों से कह रहा है, "जाओ और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को धरती पर उँड़ेल दो।"

2सो पहला दूत गया और उसने धरती पर अपना प्याला उँड़ेल दिया। परिणामस्वरूप उन लोगों के, जिन पर उस पशु का चिह्न अंकित था और जो उसकी मूर्ति को पूजते थे, भयानक पीड़ा पूर्ण छाले फूट आये।

मनुष्य के पुत्र देखें दानि. 7:13-14 यीशु स्वयं अपने लिए प्राय: इन नाम का प्रयोग किया करता था।

3इसके पश्चात् दूसरे दूत ने अपना कटोरा समुद्र पर
उँड़ेल दिया और सागर का जल मरे हुए व्यक्ति के लहू के
रूप में बदल गया और समुद्र में रहने वाले सभी जीव–जन्तु
मारे गये।
4फिर तीसरे दूत ने नदियों और जल के झरनों पर
अपना कटोरा उँड़ेल दिया। और वे लहू में बदल गये 5तभी
मैंने जल के स्वामी स्वर्गदूत को यह कहते सुना:
"वह तू ही है जो न्यायी
जो है, जो था सदा–सदा से
तू ही है जो पवित्र।
तूने जो किया है वह न्याय है।
6 उन्होंने संत जनों का
और नबियों का लहू बहाया।
तू न्यायी है
तूने उनके पीने को बस रक्त ही दिया,
क्योंकि वे इसी के योग्य रहे।"
7 फिर मैंने वेदी से आते हुए ये शब्द सुने:
"हाँ, हे सर्वशक्तिमान
प्रभु परमेश्वर!
तेरे न्याय सच्चे और नेक हैं।"
8फिर चौथे दूत ने अपना प्याला सूरज पर उँड़ेल दिया।
सो उसे लोगों को आग से जला डालने की शक्ति प्रदान कर
दी गयी। 9और लोग भयानक गर्मी से झुलसने लगे। उन्होंने
परमेश्वर के नाम को कोसा क्योंकि इन विनाशों पर उसी
का नियन्त्रण है। किन्तु उन्होंने कोई मन न फिराया और न
ही उसे महिमा प्रदान की।
10इसके पश्चात् पाँचवे दूत ने अपना प्याला उस पशु के
सिंहासन पर उँड़ेल दिया और उस का राज्य अंधकार में
डूब गया। लोगों ने पीड़ा के मारे अपनी जीभ काट ली।
11अपनी–अपनी पीड़ाओं और छालों के कारण उन्होंने
स्वर्ग के परमेश्वर की भर्त्सना तो की, किन्तु अपने कर्मों
के लिए मन न फिराया।
12फिर छठे दूत ने अपना कटोरा फरात नामक महानदी
पर उँडेल दिया और उसका पानी सूख गया। इससे पूर्व
दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो गया। 13फिर
मैंने देखा कि उस विशालकाय अजगर के मुख से, उस
पशु के मुख से और कपटी नबियों के मुख से तीन
दुष्टात्माएँ निकलीं, जो मेंढक के समान दिख रहीं थीं।
14ये शैतानी दुष्ट आत्माएँ थीं और उनमें चमत्कार दिखाने
की शक्ति थी। वे समूचे संसार के राजाओं को परम शक्तिमान
परमेश्वर के महान दिन, युद्ध करने के लिये एकत्र करने
को निकल पड़ीं।
15"सावधान! मैं दबे पाँव आकर तुम्हें अचरज में डाल
दूँगा। वह धन्य है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्रों को
अपने साथ रखता है ताकि वह नंगा न फिरे और लोग उसे
लज्जित होते न देखें।"
16इस प्रकार वे दुष्टात्माएँ उन राजाओं को इकट्ठा
करके उस स्थान पर ले आई, जिसे इब्रानी भाषा में
हरमगिदोन कहा जाता है।
17इसके बाद सातवें दूत ने अपना प्याला हवा में उँड़ेल
दिया। और सिंहासन से उत्पन्न हुई एक घनघोर ध्वनि
मन्दिर में से यह कहती निकली, "यह समाप्त हो गया।"
18तभी बिजली कौंधने लगी, गड़गड़ाहट और मेघों का
गर्जन–तर्जन होने लगा तथा एक बड़ा भूचाल भी आया।
मनुष्य के इस धरती पर प्रकट होने के बाद का यह सबसे
भयानक भूचाल था। 19वह महान् नगरी तीन टुकड़ों में
बिखर गयी तथा अधर्मियों के नगर ध्वस्त हो गये। परमेश्वर
ने बाबुल की महानगरी को दण्ड देने के लिए याद किया
था। ताकि वह उसे अपने भभकते क्रोध की मदिरा से भरे
प्याले को उसे दे दे। 20सभी द्वीप लुप्त हो गये। किसी पहाड़
तक का पता नहीं चल पा रहा था। 21चालीस चालीस किलो
के ओले, आकाश से लोगों पर पड़ रहे थे। ओलों के इस
महाविनाश के कारण लोग परमेश्वर को कोस रहे थे
क्योंकि यह एक भयानक विपत्ति थी।

पशु पर बैठी स्त्री

17 इसके बाद उन सात दूतों में से जिनके पास
सात कटोरे थे, एक मेरे पास आया और बोला,
"आ, मैं तुझे बहुत सी नदियों के किनारे बैठी उस महान
वेश्या के दण्ड को दिखाऊँगा। 2धरती के राजाओं ने उसके
साथ व्यभिचार किया है और वे जो धरती पर रहते हैं वे
उसकी व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए।"
3फिर मैं आत्मा से भावित हो उठा और वह दूत मुझे
बीहड़ वन में ले गया जहाँ मैंने एक स्त्री को लाल रंग के
एक ऐसे पशु पर बैठे देखा जो परमेश्वर के प्रति अपशब्दों
से भरा था। उसके सात सिर थे और दस सींग। 4उस स्त्री
ने बैजनी और लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे। वह सोने,
बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सजी हुई थी। वह अपने

हाथ में सोने का एक कटोरा लिये हुए थी जो बुरी बातों और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था। 5उसके माथे पर एक प्रतीकात्मक शीर्षक था: "महान बाबुल:

वेश्याओं और धरती पर
की सभी अश्लीलताओं की जननी।"

6मैंने देखा कि उस स्त्री ने संत जनों और उन व्यक्तियों के लहू पीने से मतवाली हुई है। जिन्होंने यीशु के प्रति अपने विश्वास की साक्षी को लिये हुए अपने प्राण त्याग दिये।

उसे देखकर मैं बड़े अचरज में पड़ गया। 7तभी उस दूत ने मुझसे पूछा, "तुम अचरज में क्यों पड़े हो? मैं तुम्हें इस स्त्री के और जिस पशु पर वह बैठी है, उसके प्रतीक को समझाता हूँ। सात सिरों और दस सीगों वाला यह पशु 8जो तुमने देखा है, पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है। फिर भी वह पाताल से अभी निकलने वाला है। और तभी उसका विनाश हो जायेगा। फिर धरती के वे लोग जिन के नाम सृष्टि के प्रारम्भ से ही जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं, उस पशु को देखकर चकित होंगे क्योंकि कभी वह जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है, पर फिर भी वह आने वाला है।

9यही वह बिन्दू है जहाँ विवेकशील बुद्धि की आवश्यकता है। ये सात सिर, वे सात पर्वत हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है। वे सात सिर, उन सात राजाओं के भी प्रतीक हैं, 10जिनमें से पहले पाँच का पतन हो चुका है, एक अभी भी राज्य कर रहा है, और दूसरा अभी तक आया नहीं है। किन्तु जब वह आयेगा तो उसकी यह नियति है कि वह कुछ देर ही टिक पायेगा।

11वह पशु जो पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है, स्वयं आठवाँ राजा है जो उन सातों में से ही एक है, उसका भी विनाश होने वाला है।

12जो दस सींग तुमने देखे हैं, वे दस राजा हैं, उन्होंने अभी अपना शासन आरम्भ नहीं किया है परन्तु पशु के साथ घड़ी भर राज्य करने को उन्हें अधिकार दिया जायेगा। 13इन दसों राजाओं का एक ही प्रयोजन है कि वे अपनी शक्ति और अपना अधिकार उस पशु को सौप दें। 14वे मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे किन्तु मेमना अपने बुलाए हुओं, चुने हुओं और अनुयायिओं के साथ उन्हें हरा देगा। क्योंकि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।"

15उस दूत ने मुझसे फिर कहा, "वे नदियाँ जिन्हें तुमने देखा था, जहाँ वह वेश्या बैठी थी, विभिन्न कुलों, समुदायों, जातियों और भाषाओं की प्रतीक है। 16वे दस सींग जिन्हें तुमने देखा, और वह पशु उस वेश्या से घृणा करेंगे तथा उससे सब कुछ छीन कर उसे नंगा छोड़ जायेंगे। वे शरीर को खा जायेंगे और उसे आग में जला डालेंगे। 17अपने प्रयोजन को पूरा कराने के लिये परमेश्वर ने उन सब को एक मत करके, उनके मन में यही बैठा दिया है कि वे, जब तक परमेश्वर के वचन पूरे नहीं हो जाते, तब तक शासन करने का अपना अधिकार उस पशु को सौंप दें। 18वह स्त्री जो तुमने देखी थी, वह महानगरी थी, जो धरती के राजाओं पर शासन करती है।"

बाबुल का विनाश

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश से बड़ी शक्ति के साथ नीचे उतरते देखा। उसकी महिमा से सारी धरती प्रकाशित हो उठी। 2शक्तिशाली स्वर से पुकारते हुए वह बोला:

"वह मिट गयी, बाबुल नगरी मिट गयी।
वह दानवों का आवास बन गयी थी।
हर किसी दुष्टात्मा का वह बसेरा बन गयी थी
हर किसी घृणित पक्षी का वह बसेरा बन गयी थी!
हर किसी अपवित्र, निन्दा–योग्य पशु का।
3 क्योंकि उसने सब जनों को व्यभिचार के क्रोध की
मदिरा पिलायी थी।
इस जगत के शासकों ने जो स्वयं जगाई थी
उससे व्यभिचार किया था।
और उसके भोग व्यय से
जगत के व्यापारी सम्पन्न बने थे।
4आकाश से मैंने एक और स्वर सुना जो कह रहा था:
"हे, मेरे जनो, तुम वहाँ से बाहर निकल आओ
तुम उसके पापों में कहीं साक्षी न बन जाओ;
कहीं ऐसा न हो,
तुम पर ही वे नाश गिरें जो उसके रहे थे,
5 क्योंकि उसके पाप की ढेरी
बहुत ऊँची गगन तक है।
परमेश्वर उसके बुरे कर्मों को याद कर रहा है।
6 हे! तुम भी तो उससे ठीक
वैसा व्यवहार करो जैसा

तुम्हारे साथ उसने किया था।
जो उसने तुम्हारे साथ किया
उससे दुगुना उसके साथ करो।
दूसरों के हेतु उसने
जिस कटोरे में मदिरा मिलाई
वही मदिरा तुम उसके
हेतु दुगनी मिलाओ।
7 क्योंकि जो महिमा और वैभव
उसने स्वयं को दिया
तुम उसी ढँग से उसे यातनाएँ और पीड़ा दो
क्योंकि वह स्वयं अपने
आप ही से कहती रही है,
'मैं अपनी नृपासन विराजित महारानी
मैं विधवा नहीं फिर शोक क्यों करूँगी?'
8 इसलिए वे नाश जो महा मृत्यु, महारोदन
और वह दुर्भिक्ष भीषण है।
उसको एक ही दिन घेर लेंगे,
और उसको जला कर भस्म कर देंगे
क्योंकि परमेश्वर प्रभु जो बहुत सक्षम है,
उसी ने इसका यह न्याय किया है।
9जब धरती के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और उसके भोग-विलास में हिस्सा बटाया, उसके जलने से निकलते घुआँ को देखेंगे तो वे उसके लिये रोयेंगे और विलाप करेंगे। 10वे उसके कष्टों से डर कर वहीं से बहुत दूर ही खड़े हुए कहेंगे:

"हे! शक्तिशाली नगर बाबुल!
भयावह ओ, हाय भयानक! तेरा दण्ड
तुझको बस घड़ी भर में मिल गया।"

11इस धरती पर के व्यापारी भी उसके कारण रोयेंगे और विलाप करेंगे क्योंकि उनकी वस्तुएँ अब कोई और मोल नहीं लेगा, 12वस्तुएँ-सोने की, चाँदी की, बहुमूल्य रत्न मोती, मलमल, बैजनी, रेशमी और किरमिजी वस्त्र, हर प्रकार की सुगंधित लकड़ी हाथी दाँत की बनी हुई हर प्रकार की वस्तुएँ, अनमोल लकड़ी, काँसे लोहे और संगमरमर से बनी हुई तरह-तरह की वस्तुएँ 13दार चीनी, गुलमेंहदी, सुगंधित धूप, रस गंध, लोहबान, मदिरा, जैतून का तेल, मैदा, गेहूँ, मवेशी, भेड़े, घोड़े और रथ, दास, हाँ, मनुष्यों की देह और उनकी आत्माएँ तक।

14 "हे बाबुल! वे सभी उत्तम वस्तुएँ,
जिनमें तेरा हृदय रमा था,
तुझे सब छोड़ चली गयी हैं
तेरा सब विलास वैभव भी आज नहीं है।
अब न कभी वे तुझे मिलेंगी।"

15वे व्यापारी जो इन वस्तुओं का व्यापार करते थे और उससे सम्पन्न बन गये थे, वे दूर-दूर ही खड़े रहेंगे क्योंकि वे उसके कष्टों से डर गये हैं। वे रोते-बिलखते 16कहेंगे:

"कितना भयावह और कितना भयानक है,
महानगरी! यह उसके हेतु हुआ।
उत्तम मलमली वस्त्र पहनती थी
बैजनी किर और मिजी!
और स्वर्ण से बहुमूल्य रत्नों से
सुसज्जित मोतियों से सजती ही रही थी।'
17 और बस घड़ी भर में
यह सारी सम्पत्ति मिट गयी।"

फिर जहाज का हर कप्तान, या हर वह व्यक्ति जो जहाज से चाहे कहीं भी जा सकता है तथा सभी मल्लाह और वे सब लोग भी जो सागर से अपनी जीविका चलाते हैं, उस नगरी से दूर ही खड़े रहे 18और जब उन्होंने उसके जलने से उठती धुआँ को देखा तो वे पुकार उठे, "इस विशाल नगरी के समान और कौन सी नगरी है?"

19फिर उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते हुए रोते-बिलखते कहा,

"महानगरी! हाय यह कितना भयावह!
हाय यह कितना भयानक।
जिनके पास जलयान थे,
सिंधु जल पर सम्पत्तिशाली बन गये,
क्योंकि उसके पास सम्पत्ति थी
पर अब बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी।
20 उसके हेतु आनन्द मनाओ
तुम हे स्वर्ग! प्रेरित! और नबियो!
तुम परमेश्वर के जनों आनन्द मनाओ!
क्योंकि प्रभु ने उसको ठीक
वैसा दण्ड दे दिया है
जैसा वह दण्ड उसने तुम्हें दिया था।

21फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने चक्की के पाट जैसी
एक बड़ी सी चट्टान उठाई और उसे सागर में फेंकते हुए
कहा,
"महानगरी! हे बाबुल महानगरी!
ठीक ऐसे ही तू गिरा दी जायेगी
तू फिर लुप्त हो जायेगी,
और तू नहीं मिल पायेगी।
22 तुझमें फिर कभी नहीं वीणा बजेगी,
और गायक कभी भी स्तुति पाठ न कर पायेंगे।
वंशी कभी नहीं गूँजेंगी
कोई भी तुरही तान न सुनेगा,
तुझमें अब कोई कला शिल्पी कभी न मिलेगा
अब तुझमें कोई भी कला न बचेगा!
अब चक्की पीसने का स्वर
कभी भी ध्वनित न होगा।
23 दीप की किंचित किरण
तुझमें कभी भी न चमकेगी,
अब तुझमें किसी वर की किसी वधु की
मधुर ध्वनि कभी न गुंजेगी।
तेरे व्यापारी जगती के महा मनुज थे
तेरे जादू ने सब जातों को भरमाया
24 नगरी ने नबियों का संत जनों का
उन सब ही का लहू बहाया था।
इस धरती पर जिनको बलि
पर चढ़ा दिया था।"

स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति

19 इसके पश्चात् मैंने भीड़ का सा एक ऊँचा
स्वर सुना। लोग कह रहे थे:
"हल्लिलूय्याह!
परमेश्वर की जय हो, जय हो!
महिमा और सामर्थ्य सदा हो!
2 उसके न्याय सदा सच्चे हैं, धर्म युक्त हैं,
उस महती वेश्या का उसने न्याय किया है
जिसने अपने व्यभिचार से
इस धरती को भ्रष्ट किया था
जिनको उसने मार दिया उन दास जनों की
हत्या का प्रतिशोध हो चुका।"
3 उन्होंने यह फिर गाया:
"हल्लिलूय्याह!
जय हो उसकी उससे धुआँ युग युग उठेगा।"
4फिर चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने सिंहासन
पर विराजमान परमेश्वर को झुक कर प्रणाम किया और
उसकी उपासना करते हुए गाने लगे:
"आमीन!
हल्लिलूय्याह"
जय हो उसकी
5स्वर्ग से फिर एक आवाज आयी जो कह रही थी:
"हे उसके सेवको,
तुम सभी हमारे परमेश्वर का
स्तुति गान करो तुम चाहे छोटे हो,
चाहे बड़े बने हो, जो उससे डरते रहते हो।"
6फिर मैंने एक बड़े जन समुद्र का सा शब्द सुना जो एक
विशाल जल-प्रवाह और मेघों के शक्तिशाली गर्जन-तर्जन
जैसा था। लोग गा रहे थे:
"हल्लिलूय्याह!
उसकी जय हो,
क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर!
सर्वशक्ति सम्पन्न राज्य कर रहा है।
7 सो आओ, खुश हो-हो कर आनन्द मनाएँ
आओ, उसको महिमा देवें!
क्योंकि अब मेमने के ब्याह का समय आ गया
उसकी दुल्हन सजी-धजी तैयार हो गयी
8 उसको अनुमति मिली
स्वच्छ धवल पहन ले वह निर्मल मलमल।"
(यह मलमल संत जनों के धर्ममय कार्यों का प्रतीक है।)

9फिर वह मुझसे कहने लगा, "लिखो वे धन्य हैं जिन्हें
इस विवाह भोज में बुलाया गया है।" उसने फिर कहा, "ये
परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"
10और मैं उसकी उपासना करने के लिये उसके चरणों
में गिर पड़ा। किन्तु वह मुझसे बोला, "सावधान। ऐसा मत
कर। मैं तो तेरे और तेरे बंधुओं के साथ परमेश्वर का संगी
सेवक हूँ जिन पर यीशु के द्वारा साक्षी दिये गये सन्देश के
प्रचार का दायित्व है। परमेश्वर की उपासना कर क्योंकि
यीशु के द्वारा प्रमाणित सन्देश इस बात का प्रमाण है कि
उनमें एक नबी की आत्मा है।"

सफ़ेद घोड़े का सवार

11फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे सामने
एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार 'विश्वसनीय' और
'सत्य' कहलाता था क्योंकि न्याय के साथ वह निर्णय करता
है और युद्ध करता है। 12उसकी आँखें ऐसी थीं मानों अग्नि
की लपट हो। उसके सिर पर बहुत से मुकुट थे। उस पर
एक नाम लिखा था, जिसे उसके अतिरिक्त कोई और नहीं
जानता। 13उसने ऐसा वस्त्र पहना था जिसे लहू में डुबाया
गया था। उसे नाम दिया गया था–"परमेश्वर का वचन।"
14सफेद घोड़ों पर बैठी स्वर्ग की सेनाएँ उसके पीछे पीछे
चल रही थीं। उन्होंने शुद्ध श्वेत मलमल के वस्त्र पहने थे।
15अधर्मियों पर प्रहार करने के लिये उसके मुख से एक
तेज धार की तलवार बाहर निकल रही थी। वह उन पर
लोहे के दण्ड से शासन करेगा और सर्वशक्ति–सम्पन्न
परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध की धानी में वह अंगूरों का रस
निचोड़ेगा। 16उसके वस्त्र तथा उसकी जाँघ पर लिखा था:

राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु

17इसके बाद मैंने देखा कि सूर्य के ऊपर एक स्वर्गदूत
खड़ा है। उसने ऊँचे आकाश में उड़ने वाले सभी पक्षियों से
ऊँचे स्वर में कहा, "आओ, परमेश्वर के महा भोज के
लिये एकत्र हो जाओ 18ताकि तुम शासकों सेनापतियों प्रसिद्ध
पुरुषों, घोड़ों और उनके सवारों का माँस खा सको। और
सभी लोगों स्वतन्त्र व्यक्तियों, सेवकों छोटे लोगों और
महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की देहों को खा सको।"

19फिर मैंने उस पशु को और धरती के राजाओं को
देखा। उनके साथ उनकी सेना थी। वे उस घुड़सवार और
उसकी सेना से युद्ध करने के लिये एक साथ आ जुटे थे।
20पशु को घेर लिया गया था। उसके साथ वह झूठा नबी भी
था जो उसके सामने चमत्कार दिखाया करता था और
उनको छला करता था जिन पर उस पशु की छाप लगी थी
और जो उसकी मूर्ति की उपासना किया करते थे। उस
पशु और झूठे नबी दोनों को ही जलते गंधक की भभकती
झील में जीवित ही डाल दिया गया था। 21घोड़े के सवार के
मुख से जो तलवार निकल रही थी, बाकी के सैनिक उससे
मार डाले गये फिर पक्षियों ने उनके शवों के माँस को भर
पेट खाया।

हज़ार वर्ष

20 फिर आकाश से मैंने एक स्वर्गदूत को नीचे
उतरते देखा। उसके हाथ में पाताल की चाबी
और एक बड़ी साँकल थी। 2उसने उस पुराने महा सर्प
को पकड़ लिया जो दैत्य यानी शैतान है फिर एक हजार
वर्ष के लिये उसे साँकल से बाँध दिया। 3तब उस स्वर्गदूत
ने उसे महा गर्त में धकेल कर ताला लगा दिया और उस
पर कपाट लगा कर मुहर लगा दी ताकि जब तक हजार
साल पूरे न हो जायें वह लोगों को धोखा न दे सके।
हजार साल पूरे होने के बाद थोड़े समय के लिये उसे छोड़ा
जाना है।

4फिर मैंने कुछ सिंहासन देखे जिन पर कुछ लोग बैठे
थे। उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। और
मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर, उस
सत्य के कारण, जो यीशु द्वारा प्रमाणित है, और परमेश्वर
के संदेश के कारण काटे गये थे, जिन्होंने उस पशु या
उसकी प्रतिमा की कभी उपासना नहीं की थी। तथा जिन्होंने
अपने माथों पर या अपने हाथों पर उसका संकेत चिह्न
धारण नहीं किया था। वे फिर से जीवित हो उठे और उन्होंने
मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य किया। 5(शेष
लोग हज़ार वर्ष पूरे होने तक फिर से जीवित नहीं हुए।) यह
पहला पुनरुत्थान है। 6वह धन्य है और पवित्र भी है जो
पहले पुनरुत्थान में भाग ले रहा है। इन व्यक्तियों पर दूसरी
मृत्यु को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। बल्कि वे तो परमेश्वर
और मसीह के अपने याजक होंगे और उसके साथ एक
हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

7फिर एक हज़ार वर्ष पूरे हो चुकने पर शैतान को
उसके बंदीगृह से छोड़ दिया जायेगा। 8और वह समूची धरती
पर फैली जातियों को छलने के लिये निकल पड़ेगा। वह
गोग और मागोग को छलेगा। वह उन्हें युद्ध के लिये एकत्र
करेगा। वे उतने ही अनगिनत होगें जितने समुद्र तट के
रेत–कण। 9शैतान की सेना समूची धरती पर फैल जायेगी
और वे संत जनों के डेरे और प्रिय नगरी को घेर लेंगे।
किन्तु आग उतरेगी और उन्हें निगल जाएगी, 10इस के
पश्चात् उस शैतान को जो उन्हें छलता रहा है भभकती
गंधक की झील में फेंक दिया जायेगा जहाँ वह पशु और
झूठे नबी, दोनों ही डाले गये हैं। सदा–सदा के लिये उन्हें रात
दिन तड़पाया जायेगा।

संसार के लोगों का न्याय

11फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन को और उसे
जो उस पर विराजमान था, देखा। उसके सामने से धरती
और आकाश भाग खड़े हुए। उनका पता तक नहीं चल
पाया। 12फिर मैंने छोटे और बड़े मृतकों को देखा। वे
सिंहासन के आगे खड़े थे। कुछ पुस्तकें खोली गयीं। फिर
एक और पुस्तक खोली गयी। यही 'जीवन की पुस्तक है।
उन कर्मों के अनुसार जो पुस्तकों में लिखे गये थे, मृतकों
का न्याय किया गया। 13जो मृतक सागर में थे, उन्हें
सागर ने दे दिया, तथा मृत्यु और पाताल ने भी अपने अपने
मृतक सौंप दिये। प्रत्येक का न्याय उसके कर्मो के
अनुसार किया गया। 14इसके बाद मृत्यु को और पाताल
को आग की झील में झोंक दिया गया। यह आग की झील
ही दूसरी मृत्यु है। 15यदि किसी का नाम 'जीवन की पुस्तक'
में लिखा नहीं मिला, तो उसे भी आग की झील में धकेल
दिया गया।

नया यरूशलेम

21 फिर मैंने एक नया स्वर्ग और नयी धरती
देखी। क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली धरती
लुप्त हो चुके थे। और वह सागर भी अब नहीं रहा था।
2मैंने यरुशलेम की वह पवित्र नगरी भी आकाश से बाहर
निकल कर परमेश्वर की ओर से नीचे उतरते देखी। उस
नगरी को ऐसे सजाया गया था जैसे मानों किसी दुल्हन
को उसके पति के लिये सजाया गया हो। 3तभी मैंने
आकाश में एक ऊँची ध्वनि सुनी। वह कह रही थी,
"देखो अब परमेश्वर का मन्दिर मनुष्यों के बीच है और
वह उन्हीं के बीच घर बनाकर रहा करेगा। वे उसकी
प्रजा होंगे और स्वयं परमेश्वर उनका परमेश्वर होगा।
4उनकी आँख से वह हर आँसू पोंछ डालेगा। और वहाँ
अब न कभी मृत्यु होगी, न शोक के कारण कोई रोना–धोना
और नहीं कोई पीड़ा। क्योंकि वे सब पुरानी बातें अब
समाप्त हो चुकी हैं।"

5इस पर जो सिंहासन पर बैठा था, वह बोला, "देखो, मैं
सब कुछ को नया किये दे रहा हूँ।" उसने फिर कहा, "इसे
लिख ले क्योंकि ये वचन विश्वास करने योग्य हैं और सत्य
हैं।"

6वह मुझसे फिर बोला, "सब कुछ पूरा हो चुका है। मैं
ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही आदि हूँ और मैं ही
अन्त हूँ।" जो भी प्यासा है मैं उसे जीवन–जल के स्रोत से
सेंत–मेंत में मुक्त भाव से जल पिलाऊँगा। 7जो विजयी होगा,
उस सब कुछ का मालिक बनेगा। मैं उसका परमेश्वर
होऊँ गा और वह मेरा पुत्र होगा। 8किन्तु कायरों
अविश्वासियों, दुर्बुद्धियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूटोना
करने वालों मूर्ति–पूजकों और सभी झूठ बोलने वालों को
भभकती गंधक की जलती झील में अपना हिस्सा बँटाना
होगा। यही दूसरी मृत्यु है।"

9फिर उन सात दूतों में से, जिनके पास सात अंतिम
विनाशों से भरे कटोरे थे, एक आगे आया और मुझसे
बोला, "यहाँ आ। मैं तूझे वह दुल्हिन दिखा दूँ जो मेमने की
पत्नी है।" 10अभी मैं आत्मा के आवेश में ही था कि वह मुझे
एक विशाल और ऊँचे पर्वत पर ले गया। फिर उसने मुझे
यरुशलेम की पवित्र नगरी का दर्शन कराया। वह परमेश्वर
की ओर से आकाश से नीचे उतर रही थी।

11वह परमेश्वर की महिमा से मण्डित थी। वह सर्वथा
निर्मल यशब नामक महामूल्यवान रत्न के समान चमक
रही थी। 12नगरी के चारों ओर एक विशाल ऊँचा परकोटा
था जिसमें बारह द्वार थे। उन बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत
थे। तथा बारहों द्वारों पर इस्राएल के बारह कुलों के नाम
अंकित थे। 13इनमें से तीन द्वार पूर्व की ओर थे, तीन द्वार
उत्तर की ओर, तीन द्वार दक्षिण की ओर और तीन द्वार
पश्चिम की ओर थे। 14नगर का परकोटा बारह नीवों पर
बनाया गया था तथा उन पर मेमने के बारह प्रेरितों के
नाम अंकित थे।

15जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसके पास
सोने से बनी नापने की एक छड़ी थी जिससे वह उस
नगर को, उसके द्वारों को और उसके परकोटे को नाप
सकता था। 16नगर को वर्गाकार में बसाया गया था। यह
जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा था। उस स्वर्गदूत ने उस
छड़ी से उस नगरी को नापा। वह कोई बारह हज़ार
स्टोडिया पायी गयी। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई
एक जैसी थी। 17स्वर्गदूत ने फिर उसके परकोटे को
नापा। वह कोई एक सौ चवालीस हाथ था। उसे मनुष्य के
हाथों की लम्बाई से नापा गया था जो हाथ स्वर्गदूत का
भी हाथ है। 18नगर का परकोटा यशब नामक रत्नें का
बना था तथा नगर को काँच के समान चमकते शुद्ध सोने
से बनाया गया था। 19नगर के परकोटे की नीवें हर
प्रकार के बहुमूल्य रत्नों से सजाई गयी थी। नींव का

पहला पत्थर यशब का बना था, दूसरी नीलम से, तीसरी स्फटिक से, चौथी पन्ने से, 20पाँचवीं गोमेद से, छठी मानक से, सातवीं पीत मणि से, आठवीं पेरोज से, नवीं पुखराज से, दसवीं लहसनिया से, ग्यारहवीं धूम्रकांत से, और बारहवीं चन्द्रकाँत मणि से बनी थी। 21बारहों द्वार बारह मोतियों से बने थे, हर द्वार एक-एक मोती से बना था। नगर की गलियाँ स्वच्छ काँच जैसे शुद्ध सोने की बनी थीं।

22नगर में मुझे कोई मन्दिर दिखाई नहीं दिया। क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही उसके मन्दिर थे। 23उस नगर को किसी सूर्य या चन्द्रमा की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे उसे प्रकाश दें; क्योंकि वह तो परमेश्वर के तेज से आलोकित था। और मेमना ही उस नगर का दीपक है। 24सभी जातियों के लोग इसी दीपक के प्रकाश के सहारे आगे बढ़ेंगे। और इस धरती के राजा अपनी भव्यता को इस नगर में लायेंगे। 25दिन के समय इसके द्वार कभी बंद नहीं होंगे और वहाँ रात तो कभी होगी ही नहीं। 26जातियों के कोष और धन सम्पत्ति को उस नगर में लाया जायेगा। 27कोई अपवित्र वस्तु तो उसमें प्रवेश तक नहीं कर पायेगी और न ही लज्जापूर्ण कार्य करने वाले और झूठ बोलने वाले उसमें प्रवेश कर पाएँगे उस नगरी में तो प्रवेश बस उन्हीं को मिलेगा जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

22 इसके पश्चात् उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन देने वाले जल की एक नदी दिखाई। वह नदी स्फटिक की तरह उज्ज्वल थी। वह परमेश्वर और मेमने के सिंहासन के निकलती हुई 2नगर की गलियों के बीच से होती हुई बह रही थी। नदी के दोनों तटों पर जीवन वृक्ष उगा था। उन पर हर साल बारह फसल लगा करतीं थीं। इसके प्रत्येक वृक्ष पर प्रतिमास एक फसल लगती थी तथा इन वृक्षों की पत्तियाँ अनेक जातियों को निरोग करने के लिये थीं। 3वहाँ किसी प्रकार का कोई अभिशाप नहीं होगा। परमेश्वर और मेमने का सिंहासन वहाँ बना रहेगा। तथा उसके सेवक उसकी उपासना करेंगे 4तथा उसका नाम उनके माथों पर अंकित रहेगा। 5वहाँ कभी रात नहीं होगी और न ही उन्हें सूर्य के अथवा दीपक के प्रकाश की कोई आवश्यकता रहेगी। क्योंकि उन पर प्रभु परमेश्वर अपना प्रकाश डालेगा और वे सदा सदा शासन करेंगे।

6फिर उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "ये वचन विश्वास करने योग्य और सत्य हैं। प्रभु ने जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने सेवकों को, जो कुछ शीघ्र ही घटने वाला है, उसे जताने के लिये अपना स्वर्गदूत भेजा है।"

7"सुनो! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ। धन्य हैं वह जो इस पुस्तक में दिये गये उन वचनों का पालन करते हैं जो भविष्यवाणी हैं।" 8मैं यूहन्ना हूँ। मैंने ये बातें सुनी और देखी हैं। जब मैंने ये बातें देखी सुनी तो उस स्वर्गदूत के चरणों में गिर कर मैंने उसकी उपासना की जो मुझे ये बातें दिखाया करता था। 9उसने मुझसे कहा, "सावधान, तू ऐसा मत कर। क्योंकि मैं तो तेरा, तेरे बंधु नबियों का जो इस पुस्तक में लिखे वचनों का पालन करते हैं, एक सह-सेवक हूँ। बस परमेश्वर की ही उपासना कर।"

10उसने मुझसे फिर कहा, "इस पुस्तक में जो भविष्यवाणियाँ दी गयी हैं, उन्हें छुपा कर मत रख क्योंकि इन बातों के घटित होने का समय निकट ही है। 11जो बुरा करते चले आ रहे हैं, वे बुरा करते रहें। जो अपवित्र बने हुए हैं, वे अपवित्र ही बने रहें। जो धर्मी हैं, वे धर्मी ही करते रहें। जो पवित्र हैं वे पवित्र बने रहें।"

12"देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ और अपने साथ तुम्हारे लिये प्रतिफल ला रहा हूँ। जिसने जैसे कर्म किये हैं, मैं उन्हें उसके अनुसार ही दूँगा। 13मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही पहला हूँ और मैं ही अन्तिम हूँ।" मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ।

14"धन्य हैं वह जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं। उन्हें जीवन-वृक्ष के फल खाने का अधिकार होगा। वे द्वार से होकर नगर में प्रवेश करने के अधिकारी होंगे। 15किन्तु 'कुत्ते', जादू-टोना करने वाले, व्यभिचारी, मूर्ति-पूजक या प्रत्येक वह जो झूठ पर चलता है और झूठ को प्रेम करता है, बाहर ही पड़े रहेंगे।"

16"स्वयं मुझ यीशु ने तुम लोगों के लिये और कलीसियाओं के लिये, इन बातों की साक्षी देने को अपना स्वर्गदूत भेजा है। मैं दाऊद के परिवार का वंशज हूँ। मैं भोर का दमकता हुआ तारा हूँ।"

17आत्मा और दुल्हिन कहती है "आ!" और जो इसे सुनता है, वह भी कहे, "आ" और जो प्यासा हो वह भी आये और जो चाहे वह भी इस जीवन दायी जल के उपहार को मुक्त भावसे गृहण करे।

18मैं शपथ पूर्वक उन व्यक्तियों के लिये घोषणा कर
रहा हूँ जो इस पुस्तक में लिखे भविष्यवाणी के वचनों को
सुनते हैं: उनमें से यदि कोई भी उनमें कुछ भी और
जोड़ेगा तो इस पुस्तक में लिखे विनाश परमेश्वर उस पर
ढायेगा। 19और यदि नबियों की इस पुस्तक में लिखे
वचनों में से कोई कुछ घटायेगा तो परमेश्वर इस पुस्तक
में लिखे जीवन–वृक्ष और पवित्र नगरी में से उसका भाग
उससे छीन लेगा।

20यीशु जो इन बातों का साक्षी है, वह कहता है, "हाँ! मैं
शीघ्र ही आ रहा हूँ।"

आमीन। हे प्रभु यीशु आ!

21प्रभु यीशु का अनुग्रह सबके साथ रहे! आमीन।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html